ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 6 | FEBRUARY - 2018

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के दलितोत्थान आन्दोलन में सफाई कामगार जातियों की सहभागिता

डॉ. प्रवीन कुमार[1] , डॉ. सूर्यकान्त शर्मा[2]
[1]पूर्व पी.एच.डी. छात्र इतिहास विभाग , चौ. चरण सिंह वि.वि. परिसर मेरठ.
[2]असि. प्रो. इतिहास विभाग चमनलाल महाविद्यालय , लण्ढौरा रूड़की, हरिद्वार।

प्रस्तावनाः–

डॉ. भीम राव अम्बेडकर का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एक प्रखर राजनेता और समाजशास्त्री तो थे ही, साथ ही अर्थशास्त्र, कानून व धर्मशास्त्र का काफी गहन अध्ययन भी उन्होनें किया था। उन्हें जीवन में जो भी चुनौतीपूर्ण कार्य मिला, उसे बाखूबी अंजाम देने में अपनी अद्वितीय प्रतिभा का प्रकटीकरण किया। जीवनभर उनको काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। अपने ही देश के लोगों द्वारा अपमानजनक व्यवहार सहन करना पड़ा, किन्तु उन्होनें इस सबको सहन करते हुए इन सामाजिक परिस्थितियों को बदलने का फैंसला कर लिया था। वे अछूतों को सभी अधिकार दिलाने के लिए प्रतिबद्ध थे किन्तु साथ ही उनका यह भी मानना था कि जब तक दलित स्वयं कोशिश नहीं करेगा तब तक वह उन्नति नहीं कर सकता।

उन्होनें अछूतों के उद्धार के लिए कई आन्दोलन किये। समाचार पत्र निकाले तथा गोलमेज सम्मेलनों में अछूतों की वकालत की।[1] दलितों के सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक कल्याण के लिए डॉ. अम्बेडकर द्वारा विभिन्न आन्दोलन चलाये गये और इतिहास में पहली बार अछूत अपनी जातियों के बन्धनों से ऊपर उठकर उनके आह्वान पर एक झण्डे तले संगठित होने लगे थे। अछूतों की बहुत सी जातियाँ जैसे, महार, मांग, चमार, कोली, माला, मादिया, नमोशुद्र, मेहतर और वाल्मीकि आदि के लोग उनकी शिक्षा कार्यक्रम और आन्दोलनों से प्रभावित होने लगे। सफाई कामगार जातियों के लोग भी अम्बेडकर के आन्दोलन से अछूते नहीं थे। उन्होनें न केवल अम्बेडकर के आन्दोलनों में प्रमुख भूमिका ही निभाई अपितु कई स्थानों पर उसका नेतृत्व भी किया था।[2]

समता सैनिक दल–

डॉ. अम्बेडकर ने 1927 में समता सैनिक दल की स्थापना की थी। समता सैनिक दल नवयुवकों का एक ऐसा दल था जिसका उद्देश्य नौजवानों को संगठित करना और उन्हें शिक्षा देकर मानसिक, नैतिक व शारीरिक तौर पर तैयार करके एक मजबूत संगठन बनाना था। समता सैनिक दल से बहुत से वाल्मीकि जाति के युवक जुड़े हुए थे और इस दल के नेतृत्व में उन्होनें बहुत कार्य किया था। नागपुर में सन् 1942 ई0 में जब समता सैनिक दल की कान्फ्रेंस हो रही थी उस समय इलाहाबाद उत्तर प्रदेश के श्री कल्याणचन्द व बद्रीप्रसाद वाल्मीकि इसमें शामिल हुए थे। इलाहाबाद के ही रामदीन बौद्ध, श्री नाथ हेला, सीताराम बेदहल, राजाराम अनुरागी, बनारसी लाल, गुल्लू प्रधान, बच्चनलाल रत्न, मंगल सिंह मिस्त्री एंव हीरालाल विकल भी बाबा साहब के आन्दोलन से जुड़े रहे। बद्रीप्रसाद वाल्मीकि तो आल इंडिया शेडयूल्ड कास्ट फेडरेशन से भी जुड़े हुए थे। स्वतन्त्र मजदूर दल द्वारा लड़े गये[3] 1937ई0 के चुनावों में पंजाब से चौ0 बंशीलाल वाल्मीकि ने प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा और वे चुनाव में सफल भी रहे थे। वे वाल्मीकि समाज के प्रथम व्यक्ति थे जिन्होनें चुनाव में

सफलता प्राप्त की थी और प्रथम विधायक पंजाब से चुने गये थे।[5] बाबा साहब 1942 से 1946 तक वायसराय की कौंसिल के लेबर मेम्बर रहे थे। लेबर विभाग शिमला में था। सन् 1944 ई0 में इस विभाग में तीन क्लर्क थे ये तीनों ही क्लर्क वाल्मीकि जाति के थे। इन्होनें विभाग में कर्मठता से कार्य किया था।[6] इसके अतिरिक्त इसी दौरान दिल्ली के वाल्मीकि जाति बहुत से लोग उनके सम्पर्क में आये। बाबा साहब ने पंचकुईया रोड़, स्थित ताल कटोरा कालोनी में से चुनकर कुछ अच्छे लोगों को सफाई कर्मचारी यूनियन स्थापित करने की सलाह दी और उनकी सहायता भी की थी। इस यूनियन का नाम 'म्यूनिसिपल कामगार संघ' रखा गया था, किन्तु बाद में गाँधी जी और कांग्रेस के समर्थकों ने संस्था की लेटरहेड से बाबा साहब का नाम हटा दिया था। गाँधी जी ने जब दिल्ली में पंचकुईया रेाड़ स्थित इस बस्ती में प्रवेश किया तब संस्था के कुछ पुराने लोगों ने उनका विरोध किया था।[7]

अजमेरी गेट दिल्ली के निवासी श्री चमन लाल चमन दहेलवी को डॉ. अम्बेडकर ने 1946 में शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन का सेक्रेटरी नियुक्त किया था।[8] आल इण्डिया शेडयुल्ड कास्ट फेडरेशन से वाल्मीकि समाज के लोग जुड़े हुए थे जिन्होनें न केवल इसमें कार्य ही किया अपितु कई स्थानों पर इसका नेतृत्व भी किया, जैसे शिमला में तेलूराम बैदवान जो शिमला की सफाई कर्मचारी यूनियन के अध्यक्ष तो थे ही आल इंडिया शेड्युल्ड कास्ट के फेडरेशन के शिमला शाखा के अध्यक्ष भी रहे।[9] वैदवान जी दो बार शिमला म्यूनिसिपल कमेटी के सभासद भी रह चुके थे। वे बड़े ऊंचे–विचारों एंव चरित्र वाले कट्टर अम्बेडकर वादी नेता थे। शिमला में उनके सहयोगियों में प्रमुख थे, मोधन सिंह, चानणराम, कल्याणपरी, बुद्धरामकपूर, ब्रजलाल जियालाल, पूरणचन्द, मा0 उधो सिंह एंव चौ0 सतराम आदि। श्री तेलूराम बैदवान डॉ. अम्बेडकर द्वारा 1956 ई0 में स्थापित रिपब्लिकन पार्टी के शिमला शाखा के अध्यक्ष भी रहे थे। पंजाब से भी शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन से कई वाल्मीकि समाज के कार्यकर्ता जुड़े हुए थे। जालंधर दोआब में बालमुकुंद फेडरेशन के जनरल सेक्रेटरी थे। जबकि जालंधर के श्री भागमल पागल ने भी अम्बेडकरी आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभाई। भागमल पागल कवि थे, उनकी कविताओं पर अम्बेडकरी असर दिखाई देता है। गुरदासराम आलम एक अन्य पंजाबी कवि थे, जो बाबा साहब के विचारों और व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए। जालंधर की एक प्रेस कान्फ्रेंस में आलम साहब ने अपनी नज्म अछूत पढ़ी थी जो बाबा साहब ने बहुत पसन्द की थी। जालंधर में अन्य लोग थे चुन्नीलाल थापर, रामरक्खा शुभ, तथा मोधन सिंह गिल आदि। लुधियाना में बाबु, फकीरचन्द नाहर एक अन्य कवि एवं लेखक थे जो बाबा साहब से बहुत प्रभावित थे। ये 'अछूत गजट' नामक पत्रिका के संपादक भी थे। फिरोजपुर से श्री हरवंत सिंह वाल्मीकि आल इंडिया शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन के एक कर्मठ कार्यकर्ता थे। पेप्सू में श्री विरेन्द्र सत्यवादी एंव महासिंह गिल फेडरेशन के कार्यकर्ता थे।[10]

बख्शीराम, चानणराम, पूरणचन्द, संतराम, पंजाब रविदास वाल्मीकि नौजवान सभा के कार्यकर्ता, जून 1946 में करोलबाग, नई दिल्ली में बाबा साहेब से मिले थे।[11]

महाराष्ट्र के नागपुर जिले के पूर्व महापौर रहे रामरतन जानोकर जी ने भी बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के साथ मिलकर दलितोत्थान हेतु कार्य किये। उन्होनें 1950 में नागपुर में नागपुर मेहतर विविध उद्देश्यी सहकारी संस्था (मेहतर बैंक) की स्थापना की थी। आप 14 अक्टूबर 1956 के धम्म शिक्षा कार्यक्रम के सचिव भी रहे थे। सोहनलाल ताम्बे मूल रूप से जनपद बांदा उत्तर प्रदेश के निवासी थे, आपका परिवार रोजी रोटी की तलाश में महाराष्ट्र के नागपुर में रहने लगा था, आप पर डॉ. अम्बेडकर के विचारों का गहरा प्रभाव था। आपने विभिन्न धड़ों में बटी महाराष्ट्र की सफाई कर्मचारी जातियों के एकीकरण का काम पूरी सिद्धत से किया । आप भी नागपुर महापालिका के चेयरमैन रहे।[12]

स्वामी गंगीलाल जी बौद्ध एक अन्य समाजसेवी थे जिन्होनें डॉ. अम्बेडकर के विचारों से प्रभावित होकर वाल्मीकि समाज के उत्थान हेतु कई संस्थाओं की स्थापना की और आजीवन समाज उत्थान में लगे रहे।[13]

शहादरा दिल्ली के श्री गब्दूराम वाल्मीकि भी डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा में बहुत प्रभावित थे तथा इन्होनें वाल्मीकि समाज को सम्मान एवं अधिकार दिलाने के लिए सदैव संघर्ष किया था।[14]

बाबु गंगाराम धानुक जो बाबु जगजीवन राम जी के राजनीतिक गुरू भी थे, 1932 में डॉ. अम्बेडकर से मिले और उनसे प्रभावित हुए। इटावा फर्रूखाबाद तथा उत्तर प्रदेश के अन्य जनपदों में बाबा साहब के सारे प्रोग्राम बाबू जी ने लगवाये थे। पॉच वर्षो तक वे बाबा साहब के विशेष सहयोगी रहे।[15]

लक्ष्मण राव भटकर का जन्म अमरावती जिले के धूगॉव में महार जाति में हुआ था। आप बाबा साहेब के विचारो सें प्रभावित रहे । आपने बाबा साहेब के प्रथक चुनाव की मांग का समर्थन किया था। हालांकि बाद में आप गॉधीवादी हो गये थे।[16]

रायभान जाधव महाराष्ट्र के बुलढ़ाना जिला के निवासी थे, ये 1942 में शेडयुल्ड कास्ट फेडरेशन में शामिल हुए और 1946 में वे मध्य प्रांत और बिहार विधानसभा में कांग्रेस के प्रत्याशी एल0एस0 भटकर को हराकर पहुंचे थे।[17]

एडवोकेट भगवानदास जी को भी बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर जी के सम्पर्क में रहने का श्रेय प्राप्त हुआ।[18]

उपसंहारः–

इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर के समय में उनके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर इस भारतीय समाज के अति पिछड़े, समुदाय के लोगों ने न केवल अपना सहयोग ही प्रदान किया अपितु कई स्थानों पर उनके आन्दोलनों का प्रभावी नेतृत्व भी किया।

सन्दर्भ

1. आबिद रिजवी– बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर, मारूति प्रकाशन, 33, हरी नगर, मेरठ पृ0 126।
2. भगवादास–बाबा साहब एवं भंगी जातियां, गौतम बुक सेन्टर शहादरा दिल्ली– 1996 पृ0 67
3. वही, पृ0 46–47
4. भगवानदास, पूर्वोक्त पृ0 67
5. पूर्वोक्त पृ0 67
6. वही पृ0 55
7. वही पृ0 69
8. वही पृ0 46–47
9. सूरजपाल चौहान, महान दलित क्रानितकारी योद्धा मातादीन, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 20–21
10. वही पृ0 68–71
11. बी0आर0 सांपला, डॉ. अम्बेडकर और पंजाब, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली–2013 पृ0 14–15
12. देव कुमार, बसोर समाज भोर से ढ़ोर तक, जय भीम जय समाज प्रकाशन, 270 नगर निगम मार्किट, ग्वाल टोली, कानपुर–2016 पृ0–1
13. संक्षिप्त जीवन परिचय, स्वामी गंगीलाल बौद्ध, द्वारा प्रकाशचन्द सुपुत्र स्व0 गंगीलाल बौद्ध नई दिल्ली दिनांक 25.05.2012।
14. रमणीका गुप्ता, मलमूत्र ढ़ोता भारत, शिल्पायन पब्लिकेशन दिल्ली–2009, पृ0–336।
15. सतनमान सिंह, स्वतन्त्रता संग्राम में अछूत जातियों का योगदान, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, 2013, पृ0सं0–243
16. वही, पृ0–242
17. वही, पृ0–243
18. लेखक भगवानदास की दलित कहानियाँ, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली–2015, पृ0–05।